रक्षाबंधन से पहले गुलजार हुआ रानीपुरा का थोक राखी बाजार

सीमावर्ती क्षेत्रों के व्यापारी पहुंच रहे इंदौर, फैंसी से लेकर पारंपरिक राखियों तक की बड़ी रेंज

शैलेन्द्र कश्यप

इंदौर. रक्षाबंधन नजदीक आते ही शहर का रानीपुरा बाजार राखियों के थोक कारोबार से गुलजार होने लगा है. मध्य प्रदेश के विभिन्न शहरों के साथ राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र के सीमावर्ती क्षेत्रों से भी व्यापारी राखियों की थोक खरीदारी के लिए इंदौर पहुंच रहे हैं. थोक दुकानों पर खरीदारों की आवाजाही बढ़ने लगी है और कारोबारियों को आने वाले दिनों में बिक्री और बढ़ने की उम्मीद है.

रानीपुरा बाजार में पारंपरिक मौली और रेशमी धागों वाली राखियों के साथ फैंसी और डिजाइनर राखियों की बड़ी रेंज उपलब्ध है. मोतियों वाली राखी, ब्रेसलेट स्टाइल, धार्मिक प्रतीकों वाली राखी, बच्चों के लिए कार्टून कैरेक्टर, म्यूजिक और लाइट वाली राखियां, अमेरिकन डायमंड, घड़ी और टेडी बेयर डिजाइन की राखियां खरीदारों को पसंद आ रही हैं. अलग-अलग उम्र और पसंद के अनुसार वैरायटी उपलब्ध होने से थोक व्यापारी भी फुटकर बाजार के लिए विविध स्टॉक तैयार कर रहे हैं.

थोक व्यापारियों से खरीदारी पहली पसंद

इंदौर की महिलाएं अधिकतर थोक व्यापारियों के यहां खरीदारी करना पसंद कर रही हैं. राखी पर इंदौर से बाहर जाने वाली बहनों ने भीड़ कम होने और अच्छा स्टॉक उपलब्ध होने के कारण थोक व्यापारियों से खरीदारी की. इंदौर के बाजार में राखियां की बड़ी रेंज उपलब्ध होने से उन्हें बेहतर विकल्प मिल रहे हैं. बच्चों की पसंद की राखियां और बड़ों के लिए विशेष तौर पर बनी रहियो की खरीदारी शुरू हो चुकी है जिसके कारण महिलाओं ने अपनी पसंद की खरीदारी शुरू की.

सीमावर्ती क्षेत्रों तक पहुंच रहा माल

रानीपुरा से मध्य प्रदेश के विभिन्न शहरों के साथ राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र के सीमावर्ती क्षेत्रों तक राखियों की थोक आपूर्ति हो रही है. इंदौर की भौगोलिक स्थिति और रानीपुरा में एक ही स्थान पर अलग-अलग रेंज उपलब्ध होने से बाहर से आने वाले व्यापारियों के समय और परिवहन खर्च में भी बचत हो रही है. कारोबारियों का कहना है कि रक्षाबंधन जैसे-जैसे करीब आएगा, फुटकर बाजार की मांग बढ़ेगी और इसके साथ थोक कारोबार की रफ्तार भी तेज होगी.

समय और परिवहन खर्च की भी बचत

सीमावर्ती क्षेत्रों के व्यापारियों के लिए इंदौर से खरीदारी करना समय की दृष्टि से भी सुविधाजनक है. बड़े महानगरों तक जाने की तुलना में इंदौर पहुंचना आसान होने से खरीदारी में लगने वाला समय और परिवहन खर्च कम हो जाता है. व्यापारी एक ही बाजार में अलग-अलग डिजाइन और रेंज की राखियां देखकर अपनी जरूरत के मुताबिक स्टॉक तैयार कर लेते हैं.

एक ही बाजार में मिल रहीं कई तरह की वैरायटी

थोक व्यापारी गोपाल दास वागले के अनुसार रानीपुरा की सबसे बड़ी खासियत यहां मिलने वाली राखियों की विविधता है. एक ही बाजार में अलग-अलग डिजाइन, रंग और कीमत की राखियां उपलब्ध होने से व्यापारियों को अलग-अलग जगहों पर जाने की जरूरत नहीं पड़ती. सीमावर्ती क्षेत्रों से आने वाले व्यापारी अपनी जरूरत के अनुसार एक ही स्थान से स्टॉक तैयार कर लेते हैं.

व्यापारियों ने बताया क्यों पसंद है इंदौर

पचोर से आए व्यापारी रोज गोस्वामी ने बताया कि वे कई वर्षों से राखी का कारोबार कर रहे हैं. पहले दूसरे शहरों से राखियां खरीदते थे, जहां कई बार एक जैसी वैरायटी ही उपलब्ध होती थी. पिछले पांच वर्षों से इंदौर से खरीदारी कर रहे हैं. उनके अनुसार यहां कम कीमत में कई तरह की राखियां मिल जाती हैं, जिससे लागत कम होने के साथ कारोबार करना भी आसान हो गया है.

कालापीपल के व्यापारी मनोज माहेश्वरी ने बताया कि पहले बाहर के शहरों से राखियां खरीदकर लाते थे, लेकिन इंदौर में वैरायटी, गुणवत्ता और उचित दाम के साथ बेहतर सुविधा मिल रही है. उन्होंने कहा कि इंदौर के व्यापारियों का व्यवहार भी अच्छा है, इसलिए अब वे राखियों की खरीदारी के लिए इंदौर को प्राथमिकता देते हैं.

शाजापुर निवासी खेरची व्यापारी पप्पू ने बताया कि व्यापार शुरू करने के बाद से वे इंदौर से ही राखियां खरीद रहे हैं। यहां उचित कीमत पर बच्चों और बड़ों के लिए अलग-अलग थीम की राखियां मिल जाती हैं. पिछले साल की तुलना में इस बार राखियों के दाम कुछ बढ़े हैं, लेकिन इंदौर में उचित भाव और अच्छी वैरायटी मिलने से व्यापार में फायदा हो रहा है.

1 से 500 रुपए तक की राखियां उपलब्ध

थोक व्यापारी सतीश अमरवानी ने बताया कि राखी का कारोबार त्योहार से करीब डेढ़ से दो महीने पहले ही शुरू हो जाता है. उनके पास 1 रुपए से लेकर 500 रुपए तक की अलग-अलग रेंज की राखियां उपलब्ध हैं. अमेरिकन डायमंड, घड़ी, साउंड और टेडी बेयर वाली राखियों की मांग बनी हुई है. इसके अलावा सूती और रेशमी धागों से बनी पारंपरिक राखियां भी खरीदी जा रही हैं. आने वाले दिनों में कारोबार और बढ़ने की उम्मीद है.

संस्कारों, शालीनता और संवेदना में भी नंबर वन बने इंदौर

नवभारत

मेरा प्यारा शहर इंदौर जैसा मेरी यादों में है मैं वैसा ही अपने शहर को देखना चाहती हूं इंदौर शहर हर मामले में बहुत तरक्की कर रहा है पर मैं चाहती हूं फिर से उसमें पुराना भाईचारा ,अपनापन लौट आये जहां लोग बाग एक दूसरे के सुख- दु:ख में शामिल हों, रात के अंधेरे किसी को डराए नहीं सड़क पर बिना किसी अपराधिक घटना घटने के भय से निश्चिंत पहले की तरह आ जा सकें.

स्वच्छता के तो हम सिरमौर हैं ही पर साथ में संस्कारों, शालीनता और संवेदना में भी नंबर वन बनें. बार एवं पब के बाहर नशे से झूमते युवा न दिखें. बल्कि मेरा शहर उच्च शिक्षा एवं रोजगार की उपलब्धता के लिए जाना जाए. कोई दुर्घटना होने पर वीडियो बनाने की जगह सहायता करते लोग दिखें. मेरे सपनों के शहर इंदौर में सुव्यवस्थित यातायात हो रेड लाइट पार करकेहेलीकॉप्टर की तरह से चलने वाले वाहनों की जगह व्यवस्थित कतार से चलते हुए, ट्रैफिक नियमों का पालन करते हुए ,व्यवस्थित पार्किंग वाला शहर हो. अतिथि सत्कार और मीठी बोली के लिए जाना जाने वाले इंदौर की सड़कों पर ट्रैफिक में आगे निकलने की होड़ में क्रोध भरे गाली गलौज के शब्द कान में न पड़ें. कटते वृक्षों से कंक्रीट जंगल बनता हुआ शहर में हरियाली से आच्छादित वातावरण हो साल भर पानी के टैंकर दौड़ते न दिखें. जल एवं वृक्ष संरक्षण के लिए भगीरथ प्रयास कर के इंदौर की प्राकृतिक सम्पदा को संरक्षित करके 'मालव माटी गहन गंभीर डग डग रोटी पग पग नीर' का सपना साकार हो. मेरे सपनों के शहर में अपने कर्तव्य पालन में शासन ,प्रशासन और जन भागीदारी की मिसाल कायम हो ,हर कोई अपनी जिम्मेदारी समझे और निभाए इन तीनों में परस्पर संवाद और समन्वय से सपने भी सच हो सकते हैं.

महिमा वर्मा (लेखिका एवं पूर्व शिक्षिका)

नवभारत
कैसा हो सपनों का इंदौर

हमारा शहर जनसंख्या एवं भौगोलिक दृष्टि से काफ़ी विकसित हो गया है, इसलिए आवागमन के सार्वजनिक परिवहन के साधनों की सुविधा बढ़ाना चाहिए एवं लोगों को भी जागरूक होना चाहिए इनका उपयोग करने के लिए. इससे सड़कों पर वाहनों की संख्या कम होगी और लोगों को पेट्रोल में जितना खर्च कम करना पड़ता उसमें फ़ायदा मिलेगा. इससे दुर्घटनाएँ भी कम होंगी इस तरह कुछ छोटे कुछ बड़े प्रयास प्रशासन के साथ जनभागीदारी द्वारा किए जाएं तो इंदौर आदर्श उदाहरण बनेगा.

मां जीण माता की भक्ति में मिलता है अलग आनंद

नवभारत

इंदौर. पाटनीपुरा स्थित श्री जीण माता मंदिर में सावन माह के शुभ अवसर पर श्री जीण माता मासिक मंगलपाठ एवं सावन झूला उत्सव का आयोजन रविवार को किया गया. कार्यक्रम में मां जीण माता का मंगल पाठ, ज्योत दर्शन, मंगल आरती सहित सावन झूला उत्सव के विभिन्न धार्मिक आयोजन किया गया.

कार्यक्रम की पाठ वाचिका स्वाति अग्रवाल ने बताया कि मां जीण माता की भक्ति करने में मुझे एक अलग ही आनंद और आत्मिक शांति का अनुभव होता है. जब हम मां का मंगल पाठ करते हैं तो मन में सकारात्मक ऊर्जा आती है और ऐसा लगता है जैसे मां स्वयं अपने भक्तों के बीच उपस्थित हैं। मेरा प्रयास रहता है कि अधिक से अधिक भक्त मां की भक्ति से जुड़ें और उनके जीवन में सुख-शांति बनी रहे. उन्होंने कहा कि सावन माह में आयोजित होने वाले इस मंगल पाठ और झूला उत्सव में सभी श्रद्धालुओं को परिवार सहित शामिल होकर मां जीण माता का आशीर्वाद लेना चाहिए. मां की भक्ति मन को शांति देती है और जीवन में नई ऊर्जा का संचार करती है. कार्यक्रम में माता रानी का मंगलपाठ, जन्मोत्सव, मेहंदी, चूड़ी, गजरा एवं झूला उत्सव विशेष आकर्षण रहा. आयोजन श्री जीण माता चैरिटेबल ट्रस्ट इंदौर एवं श्री जीण माता मासिक मंगलपाठ उत्सव समिति द्वारा किया गया.

ब्राइडल शो में दिखा भारतीय संस्कृति और आधुनिक मेकअप का संगम

- अलग-अलग शहरों से आए मेकअप आर्टिस्ट ने पेश किए अनोखे ब्राइडल लुक,
- प्रतिभाशाली महिलाओं को मिला 'मां अहिल्या ब्राइडल एक्सीलेंस अवॉर्ड'

नवभारत

इंदौर. बदलते फैशन दौर में ब्राइडल मेकअप भी लगातार नए प्रयोगों के साथ आगे बढ़ रहा है. इसी को भारतीय संस्कृति और पारंपरिक सौंदर्य से जोड़ते हुए शहर में आयोजित ब्राइडल शो में अलग-अलग शहरों से आए मेकअप आर्टिस्ट ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया. शो में मां लक्ष्मी के आठ स्वरूपों की अवधारणा को केंद्र में रखते हुए विभिन्न ब्राइडल लुक प्रस्तुत किए गए.

कार्यक्रम का उद्देश्य केवल आधुनिक मेकअप तकनीकों और फैशन को प्रदर्शित करना ही नहीं, बल्कि नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति, परंपराओं और पारंपरिक श्रृंगार से जोड़ना भी रहा. इसी विचार के साथ शो की थीम 'अष्टलक्ष्मी' रखी गई. मॉडल्स ने मां लक्ष्मी के विभिन्न स्वरूपों से प्रेरित परिधानों और श्रृंगार के साथ मंच पर आकर्षक प्रस्तुतियां दीं. कार्यक्रम के दौरान ब्राइडल मेकअप की अलग-अलग शैलियों को प्रस्तुत किया गया. पारंपरिक आभूषण, परिधान और आधुनिक मेकअप तकनीकों के मेल ने प्रस्तुतियों को खास बनाया. आयोजक विजया पालीवाल ने बताया कि आमतौर पर ब्राइडल शो में मेकअप के नए ट्रेंड और तकनीक देखने को मिलती हैं, लेकिन इस आयोजन के माध्यम से भारतीय संस्कृति और परंपराओं को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास किया गया. आधुनिक ब्राइडल मेकअप और फैशन के साथ हमारी सांस्कृतिक विरासत को भी आगे बढ़ाना जरूरी है. कार्यक्रम में विधायक एवं पूर्व महापौर मालिनी गौड़ और डॉ. प्रतीक श्रीवास्तव मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए.

प्रतिभाओं को किया सम्मानित

ब्राइडल शो में अलग-अलग शहरों से पहुंचे मेकअप आर्टिस्ट ने अपनी कला का प्रदर्शन किया. इसके साथ ही मेकअप और ब्यूटी क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली महिलाओं को 'मां अहिल्या ब्राइडल एक्सीलेंस अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया. आयोजन में मौजूद दर्शकों को ब्राइडल मेकअप के बदलते ट्रेंड्स के साथ भारतीय संस्कृति से जुड़े विभिन्न स्वरूपों की जानकारी भी मिली.

सदाबहार गीतों से सजी संगीत की शाम

इंदौर. श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, इंदौर में आयोजित संगीत कार्यक्रम में सदाबहार गीतों की प्रस्तुतियों ने माहौल को सुरमयी बना दिया. कार्यक्रम में अलगाव म्यूजिकल ग्रुप द्वारा पुराने और लोकप्रिय गीतों की प्रस्तुतियां दी गईं. कलाकारों ने अपनी गायकी से श्रोताओं का मनोरंजन किया और कार्यक्रम स्थल तालियों से गूंज उठा. कार्यक्रम के दौरान मंच को आकर्षक ढंग से सजाया गया था. कलाकारों ने एक के बाद एक मधुर गीत प्रस्तुत किए, जिन्हें सुनकर उपस्थित श्रोता भाव-विभोर नजर आए. संगीत के साथ कलाकारों की प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम में उत्साह और उमंग का माहौल बना दिया. आयोजन का उद्देश्य संगीत और साहित्य के माध्यम से लोगों को मनोरंजन के साथ सांस्कृतिक जुड़ाव से जोड़ना रहा। कार्यक्रम के दौरान कलाकारों का उत्साहवर्धन करते हुए श्रोताओं ने उनकी प्रस्तुतियों की सराहना की. सदाबहार गीतों की इस संगीत संध्या ने उपस्थित लोगों को पुराने दौर की मधुर यादों से जोड़ दिया.

श्रोताओं ने उठाया सुरों का आनंद

अग्रसेन क्लब में राखी एग्जीबिशन का समापन

नवभारत

इंदौर सपना-संगीता रोड स्थित कच्छ पाटीदार भवन, नौलखा परिसर के सामने श्री अग्रसेन क्लब में 8 और 9 अगस्त को आयोजित दो दिवसीय राखी एग्जीबिशन का रविवार को समापन हो गया. इसमें इंदौर सहित शहर के बाहर से आए व्यापारियों और घर से व्यवसाय करने वाली महिलाओं ने 70 से अधिक स्टॉल लगाए.

रक्षाबंधन और तीज को ध्यान में रखते हुए लगाई गई इस प्रदर्शनी में महिलाओं के लिए राखी, कपड़े, सूट, लहंगे, ब्लाउज, ज्वेलरी, फैशन एवं लाइफस्टाइल से जुड़ी विभिन्न वस्तुओं के स्टॉल लगाए गए. खास बात यह रही कि एग्जीबिशन में उन महिलाओं को भी स्टॉल उपलब्ध कराए गए, जो घर से अपना व्यवसाय संचालित करती हैं. उन्हें अपने उत्पाद लोगों तक पहुंचाने और व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए एक बेहतर प्लेटफॉर्म देने के उद्देश्य से यह आयोजन किया गया. एग्जीबिशन में आने वाले लोगों ने यहां के माहौल और स्टॉलों की विविधता को पसंद किया. रविवार को बड़ी संख्या में लोग अपने परिवार के साथ खरीदारी करने पहुंचे. रविवार को एग्जीबिशन में विशेष अतिथियों का आगमन भी हुआ. इस दौरान सांसद शंकर लालवानी, पुष्पमित्र भार्गव, पूर्व महापौर श्रीमती मालिनी लक्ष्मण सिंह गौड़ अग्रवाल समाज के वरिष्ठ समाजसेवियों सहित अन्य गणमान्य लोगों ने कार्यक्रम में पहुंचकर आयोजन की सराहना की. दो दिवसीय इस राखी एग्जीबिशन का उद्देश्य त्योहारों के लिए लोगों को एक ही स्थान पर विभिन्न उत्पाद उपलब्ध कराने के साथ-साथ घर से व्यवसाय करने वाली महिलाओं को बाजार और ग्राहकों से जोड़ना भी रहा.

उपहार में मिला चांदी का सिक्का

एग्जीबिशन में खरीदारी करने पहुंचीं लक्ष्मी ने बताया कि उन्होंने यहां करीब 10 हजार रुपये की खरीदारी की, जिसके उपहार में उन्हें चांदी का सिक्का मिला. उन्होंने कहा कि उन्हें एग्जीबिशन का आयोजन बहुत अच्छा लगा, वह अपने परिवार के साथ यहां आई थीं और परिवार के अन्य सदस्यों ने भी अपनी पसंद की खरीदारी की.

एक नजर में | पंकज वागले के प्रभावी दिग्दर्शन में संस्थान नटरंग उत्सव की बेहतरीन प्रस्तुति

रिश्तों के महत्व को रेखांकित कर सामाजिक विमर्श खड़ा करता नाटक रेशन कार्ड

नवभारत

इंदौर. 21 वीं सानंद नाट्य स्पर्धा में रविवार को प्रथमेश पवार लिखित और पंकज वागले निर्देशित नाटक 'रेशन कार्ड' की बेहतरीन प्रस्तुति दी गई. संस्था नटरंग उत्सव द्वारा मंचित नाटक एक साधारण से घरेलू प्रसंग के बहाने परिवार के भीतर लगातार बढ़ती भावनात्मक दूरियों, संवादहीनता और रिश्तों में छिपी संवेदनाओं को बेहद प्रभावी ढंग से सामने लाता है.

मुंबई की एक चाल में रहने वाले सुभाष परब, उनकी पत्नी सुनंदा, बेटे अभि, बेटी दीदी और गांव से मुंबई लाई गई दादी के माध्यम से नाटक आज के उस परिवार की तस्वीर खींचता है, जिसमें लोग एक ही छत के नीचे रहते तो हैं, लेकिन मन से एक-दूसरे से बहुत दूर होते जा रहे हैं. नाटक की सबसे बड़ी खूबी इसका सहज और स्वाभाविक कथानक है. राशन कार्ड जैसी मामूली लगने वाली वस्तु को लेखक प्रथमेश पवार ने कहानी का केंद्रीय सूत्र बनाकर रिश्तों की कई परतें खोल दी हैं. अभि को विदेश में नौकरी का अवसर मिलता है और आवश्यक दस्तावेज के रूप में राशन कार्ड की तलाश शुरू होती है. राशन कार्ड नहीं मिलता तो घर में आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो जाता है. लेकिन जब यह सच सामने आता है कि राशन कार्ड सुनंदा ने ही छिपाया है, तब दर्शक के सामने केवल एक रहस्य नहीं खुलता, बल्कि एक मां के मन की वह पीड़ा सामने आती है, जिसे परिवार ने कभी समझने की कोशिश ही नहीं की.

कलाकार ...

डॉ. पियुष केंदुरकर, अमोल श्रीखंडे, अपर्णा सानप, सीमा गर्गे, स्वप्निल राखे, श्री भागवत, दिलीप नजाण, खुशी भागवत, भावना कोतवाल, अरूण गोखले, देवांश बोरगांवकर, श्रीमती मनिषा सुपेकर, सपना धरले, मयुरी धरपळे.

प्रथमेश पवार की लेखनी की विशेषता यह है कि उन्होंने किसी पात्र को खलनायक नहीं बनाया. हर व्यक्ति अपने भीतर एक संघर्ष लेकर चलता है. यही मानवीय दृष्टि नाटक को भावनात्मक गहराई देती है. दिग्दर्शक पंकज वागले ने लेखक की संवेदना को मंच पर प्रभावशाली रूप दिया है. सुभाष, सुनंदा, अभि, दीदी और दादी की भूमिकाएं निभाने वाले कलाकारों ने अपने-अपने पात्रों की मानसिकता को विश्वसनीयता के साथ प्रस्तुत किया है.

'रेशन कार्ड' दरअसल, राशन कार्ड खोजने की कहानी नहीं, बल्कि उन रिश्तों को खोजने की कहानी है, जो साथ रहते-रहते कहीं खो गए हैं. नाटक दर्शकों से एक सरल लेकिन गहरा सवाल पूछता है कि क्या हम अपने सबसे करीबी लोगों को वास्तव में समझते हैं?